अध्याय 2

भारत का पड़ोसी देशों से संबंध

हमारी नियति परस्पर अविभाज्य रूप से जुड़ी हुई है। एक राष्ट्र को प्रभावित करने वाली घटनाएँ अन्य राष्ट्रों को भी प्रभावित करती हैं।

– नेल्सन मंडेला (1995)

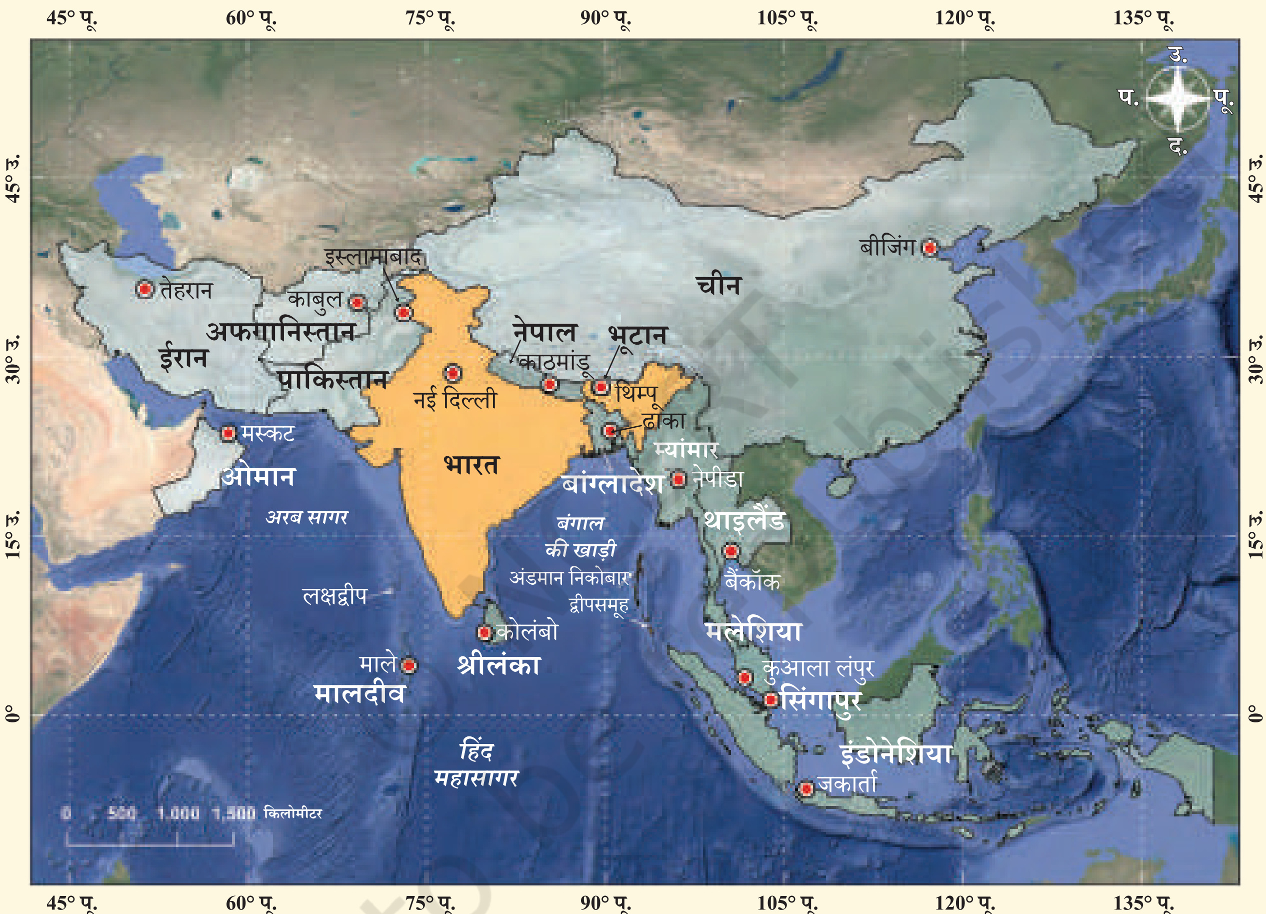

चित्र 2.1 — भारत और उसके कुछ पड़ोसी राष्ट्र

महत्त्वपूर्ण प्रश्न ?

1. पड़ोसी की क्या परिभाषा है? क्या पड़ोसी होना केवल भूमि सीमाओं को साझा करने तक ही सीमित है?
2. भूगोल और इतिहास किस प्रकार भारत और उसके पड़ोसी राष्ट्रों के मध्य संबंधों को प्रभावित करते हैं?
3. वर्तमान समय में भारत और उसके पड़ोसी देश किन रूपों में परस्पर जुड़े हुए हैं?

0784CH02

पड़ोस की रूपरेखा

जब भी हम पड़ोसी राष्ट्र के विषय में सोचते हैं तो प्रायः हमारे मन में उस राष्ट्र की छवि उभरती है जो हमारे राष्ट्र के साथ स्थलीय सीमा से जुड़ा हुआ है। पड़ोसी राष्ट्र के संदर्भ में यह एक पारंपरिक अवधारणा है। इस दृष्टि से हमारे पड़ोसी देश उत्तर-पश्चिम में पाकिस्तान और अफगानिस्तान, उत्तर में चीन का तिब्बती क्षेत्र, नेपाल एवं भूटान, पूर्व में बांग्लादेश एवं म्यांमार हैं। भारत की कुल स्थलीय सीमा लगभग 15,100 किलोमीटर है जो मरुस्थलों, मैदानों, वनों, पर्वतों, दलदली क्षेत्रों और नदी-घाटियों जैसे विविध भूभागों से होकर गुजरती है।

यद्यपि ऐतिहासिक रूप से भारत एक समुद्रतटीय राष्ट्र रहा है, जो तीन ओर से समुद्र से घिरा हुआ है। इस कारण समुद्र-पार श्रीलंका एवं मालदीव ही हमारे निकटतम पड़ोसी हुए। परंतु यदि हम उच्च तुंगता वाले उपग्रह के माध्यम से देखें, तो यह स्पष्ट होता है कि ईरान, ओमान, थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, और इंडोनेशिया जैसे राष्ट्र भी भारत के समुद्री पड़ोसी हैं। इस अध्याय में हम पड़ोसी राष्ट्र की इसी व्यापक अवधारणा के आधार पर दक्षिण एशिया में भारत की केंद्रीय और रणनैतिक स्थिति को समझने का प्रयत्न करेंगे।

इसे अनदेखा न करें

समुद्री पड़ोसी कौन होते हैं?

समुद्री पड़ोसी वह राष्ट्र होता है जो किसी अन्य राष्ट्र के साथ समुद्र या महासागर की साझेदारी के माध्यम से जुड़ा हो, भले ही उन राष्ट्रों के मध्य कोई प्रत्यक्ष स्थलीय सीमा न हो (कक्षा 6 की पाठ्यपुस्तक में 'महासागर एवं महाद्वीप' नामक अध्याय को पुनः पढ़ें)। शताब्दियों से व्यापार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और ऐतिहासिक संबंधों को सुदृढ़ करने में महासागरों ने एक महत्त्वपूर्ण सेतु के रूप में कार्य किया है। इस अध्याय में हम भारत के निकटतम समुद्री पड़ोसी राष्ट्रों के विषय में चर्चा करेंगे।

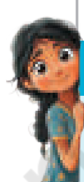

आइए पता लगाएँ

सामने के पृष्ठ पर दिए गए मानचित्र (चित्र 2.2) में भारत को घेरने वाले तीन विशाल जलाशयों की पहचान कीजिए।

© NCERT not to be republished

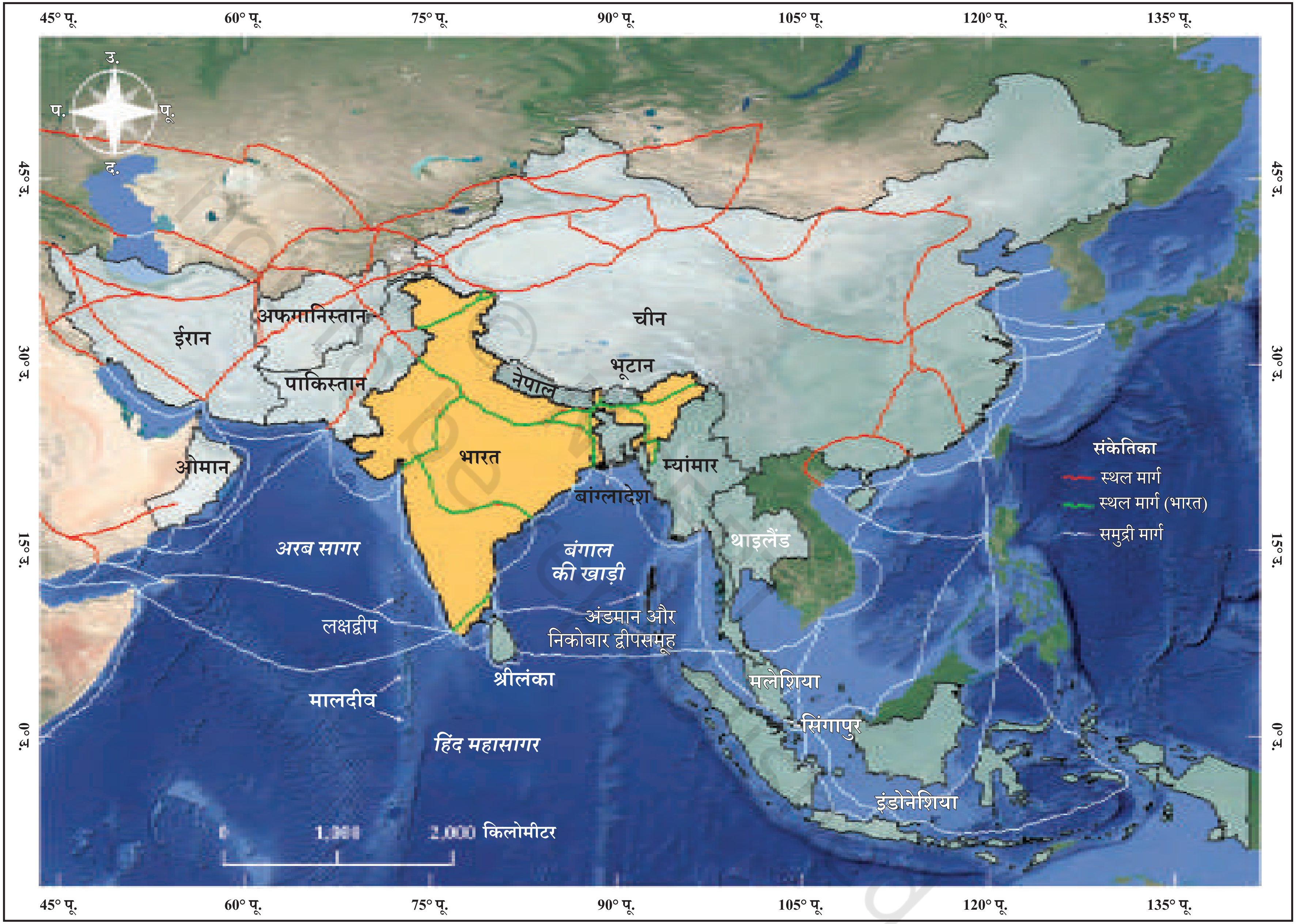

चित्र 2.2 — शताब्दियों से भारत को यूरेशिया और अफ्रीका के विभिन्न राष्ट्रों से जोड़ने वाले समुद्री तथा स्थलीय मार्गों का सरलीकृत मानचित्र (यहाँ मानचित्र में दर्शाए गए मार्ग अनुमानित हैं तथा समय के साथ इनमें परिवर्तन होता रहा है।)

इसे अनदेखा न करें

हिंद महासागर विश्व का तीसरा सबसे बड़ा महासागर है। यह एक अत्यंत व्यस्त समुद्री मार्ग है। विश्व के आधे मालवाहक जहाज, एक-तिहाई भारी माल और विश्व के दो-तिहाई तेल का परिवहन इसी महासागर के माध्यम से होता है। यह महासागर अनेक राष्ट्रों को आपस में जोड़ता है जिनमें लगभग 2.7 अरब लोग निवास करते हैं।

लगभग 11,100 किलोमीटर लंबी तटरेखा के साथ, भारत की समुद्री स्थिति विशिष्ट है। इसका प्रायद्वीपीय आकार हिंद महासागर में भीतर तक विस्तृत है। यह स्थिति भारत को महत्त्वपूर्ण समुद्री मार्गों तक पहुँच प्रदान करती है। इससे भारत दक्षिण-पूर्व एशिया, पश्चिम एशिया और अफ्रीका के मध्य एक महत्वपूर्ण कड़ी की भूमिका निभाता है। इस प्रकार भारत को व्यापार और क्षेत्रीय सहयोग में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने का अवसर मिला है। भारत के पत्तन आयात और निर्यात के प्रमुख प्रवेश-द्वार हैं। साथ ही भारत की केंद्रीय स्थिति इस क्षेत्र में मानवीय सहायता और आपदा के समय राहत प्रदान करने में सहायता प्रदान करती है।

इस तरह की सहभागिता को क्षेत्रीय सहयोग कहा जाता है जो शांति, स्थिरता और साझा प्रगति को प्रोत्साहित करती है। क्षेत्रीय सहयोग हमें सिखाता है कि अच्छे पड़ोसी होने का अर्थ मात्र भू-सीमाओं तक सीमित रहना नहीं है, अपितु संपूर्ण क्षेत्र के लाभ के लिए मिलकर कार्य करना भी है। भारत को विश्व के भिन्न-भिन्न भागों से जोड़ने वाले स्थलीय व समुद्री मार्गों के घने जाल को समझने के लिए चित्र 2.2 में दिए गए मानचित्र को देखिए।

भारत और उसके स्थलीय पड़ोसी

भारत और उसका सबसे बड़ा पड़ोसी

1950 से भारत और **चीन** एशिया के दो सबसे बड़े और प्रभावशाली देश रहे हैं जो इतिहास, भूगोल, संस्कृति, व्यापार और राजनीति के अनुरूप दीर्घकालिक और रणनैतिक संबंधों को साझा करते हैं। हिमालय पर्वतमाला द्वारा पृथक इन राष्ट्रों की सीमा (पूर्व से पश्चिम तक) विभिन्न राज्यों जैसे— अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख से होकर गुजरती है।

सांस्कृतिक दृष्टि से बौद्ध धर्म दोनों देशों के मध्य एक शक्तिशाली कड़ी है। भारत में उद्भूत होकर व्यापार और तीर्थयात्रा मार्गों के माध्यम से लगभग पहली शताब्दी सा.सं. में यह चीन पहुँचा। कुछ शताब्दियों पश्चात फाशिएन और श्वेनजांग जैसे

© NCERT not to be republished

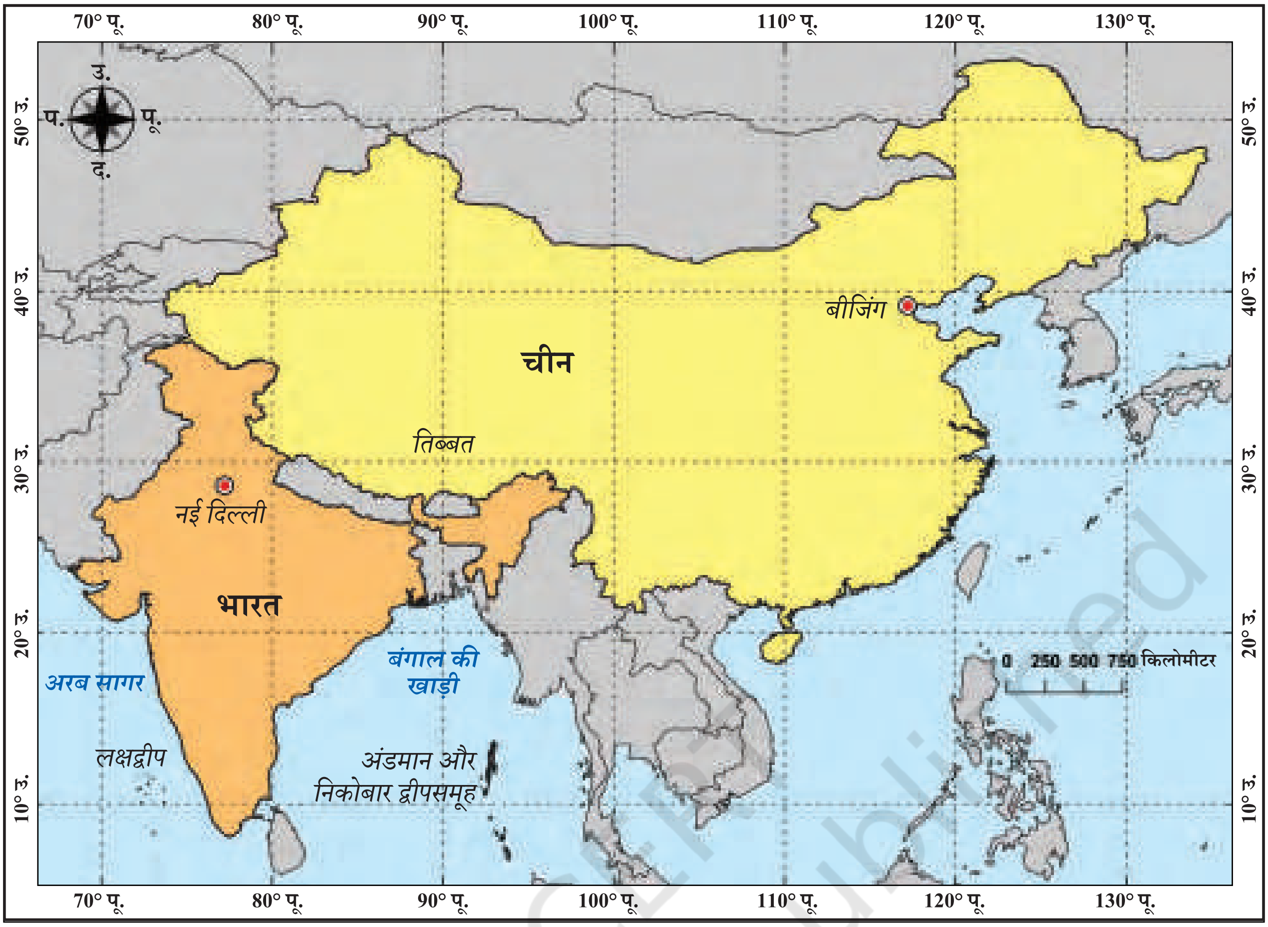

चित्र 2.3 — भारत और चीन (ध्यान दें कि क्षेत्रफल के अनुसार चीन, भारत से लगभग तीन गुना बड़ा है।)

© NCERT not to be republished

चीनी भिक्षुओं ने भारतीय शिक्षण केंद्रों की यात्रा की जबकि बोधिधर्म, धर्मक्षेम और कुमारजीव जैसे भारतीय बौद्ध भिक्षुओं ने बौद्ध शिक्षाओं को चीन तक पहुँचाया। इस प्रकार दोनों देशों के मध्य गहरे आध्यात्मिक और बौद्धिक संबंध विकसित हुए।

चित्र 2.4 — कैयुआन मंदिर के एक स्तंभ पर 'गजेंद्र-मोक्षम्' अर्थात विष्णु द्वारा हाथी को मगरमच्छ से मुक्त कराने की कथा उत्कीर्ण है।

इसे अनदेखा न करें

13वीं शताब्दी में हिंदू व्यापारियों ने चीन के एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र एवं पत्तन नगर क्वेनछाउ में मंदिरों का निर्माण करवाया। कैयुआन मंदिर में स्तंभों पर भगवान विष्णु, शिव एवं रामायण तथा पुराणों की कथाएँ उत्कीर्णित हैं।

भारत का चीन के साथ व्यापारिक संबंध वर्तमान में भी निरंतर बना हुआ है। वर्ष 2024–2025 में भारत ने चीन को मुख्य रूप से लौह अयस्क, रसायन और सूती धागों का निर्यात किया है एवं उससे इलेक्ट्रॉनिक सामान (जिनमें मोबाइल फोन, कंप्यूटर हार्डवेयर आदि सम्मिलित हैं) और विभिन्न प्रकार के औद्योगिक उपकरणों का आयात किया है। अनेक भारतीय एवं चीनी कंपनियों ने एक-दूसरे के देश में व्यापारिक केंद्र स्थापित किए हैं। तथापि वर्तमान में व्यापार संतुलन चीन के पक्ष में अधिक है क्योंकि चीनी निर्यात भारतीय निर्यात से लगभग आठ गुना अधिक है।

हाल के वर्षों में दोनों देशों के मध्य तनाव के अनेक चरण भी देखे गए हैं और कुछ गंभीर संघर्ष भी हुए हैं। ये अधिकांशतः दोनों देशों की साझा सीमाओं से संबंधित हैं। इनका अध्ययन आप उच्च कक्षाओं में करेंगे। साथ ही व्यापार, संवाद और सीमा-समाधान के माध्यम से विवादों के समाधान के प्रयास किए जा रहे हैं।

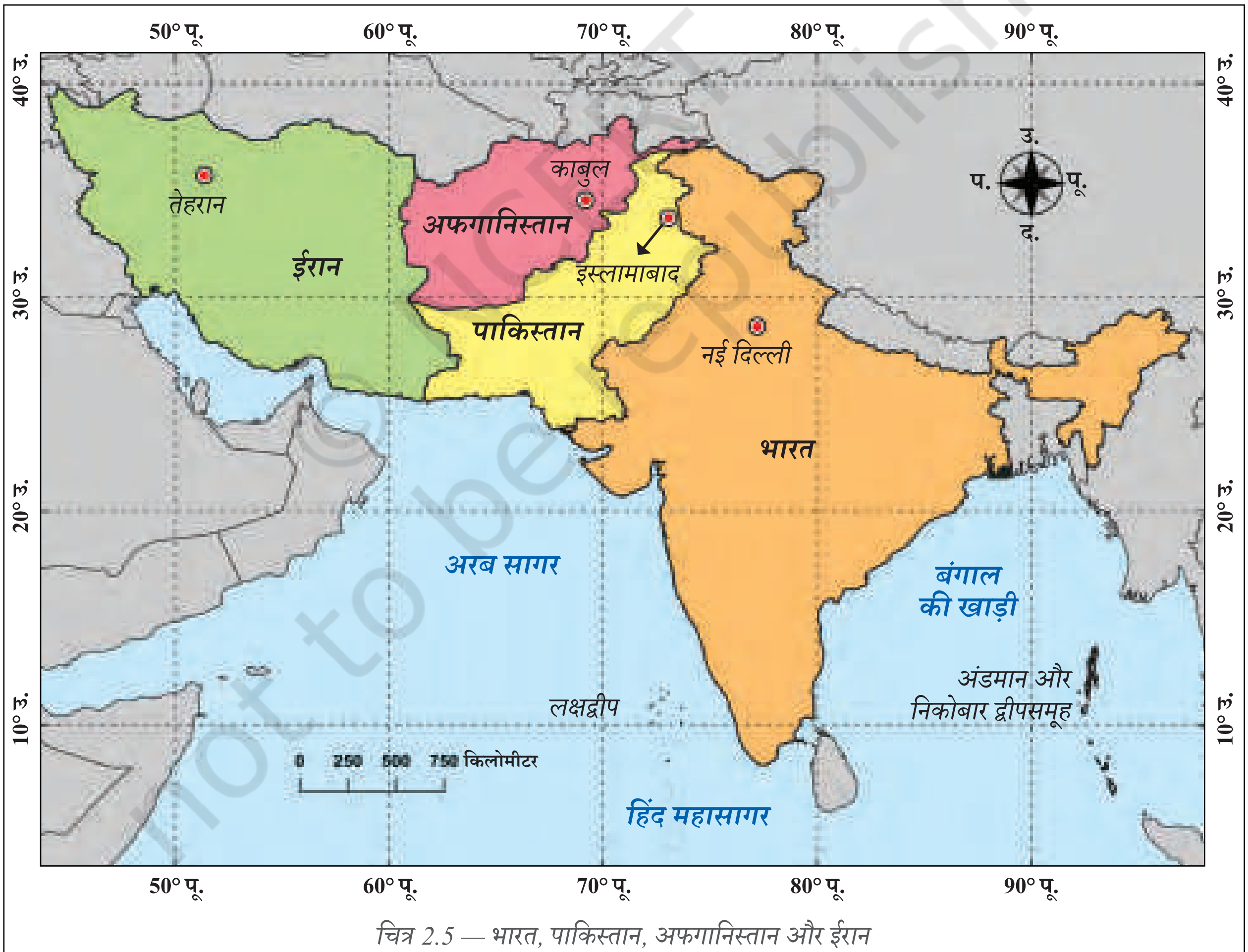

चित्र 2.5 — भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान और ईरान

भारत एवं पाकिस्तान

1947 के विभाजन से पहले पाकिस्तान भारत का ही भाग था। यह विभाजन औपनिवेशिक काल की एक विरासत है और यह आज भी वर्तमान को प्रभावित कर रहा है। अभी के लिए हम यह स्मरण रखें कि भारत से भिन्न पाकिस्तान की स्थापना का आधार धार्मिक था। इस पर कक्षा आठ में विस्तारपूर्वक चर्चा की जाएगी। अभी के लिए इतना जानना पर्याप्त है कि ये दोनों देश दक्षिण एशिया के सर्वाधिक जटिल संबंधों को साझा करते हैं। विभाजन के उपरांत 1948, 1965 और 1971 के युद्धों सहित अनेक सैन्य संघर्षों ने और 1999 में कारगिल युद्ध जैसे व्यापक संघर्षों के कारण दोनों देशों के मध्य निरंतर तनाव की स्थिति बनी रही है। विशेष रूप से पाकिस्तानी सेना के समर्थन से भारत के विरुद्ध किए गए लगातार आतंकवादी हमलों ने दोनों देशों के मध्य सामान्य संबंधों की स्थापना में बाधा उत्पन्न की है।

दोनों देशों की सीमा भारत के विभिन्न राज्यों गुजरात, राजस्थान, पंजाब और केंद्रशासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर तथा लद्दाख से होकर गुजरती है (चित्र 2.5)। यह केवल एक भौगोलिक रेखा नहीं है, अपितु यह साझी विरासत होने के साथ-साथ दुखद विभाजित इतिहास का प्रतीक भी है।

इस उथल-पुथल भरे इतिहास में शांति के लिए भी प्रयास हुए हैं, जैसे एक सीमित अवधि के लिए व्यापार को आरंभ करना और हिंदू या सिख तीर्थयात्रियों के लिए तीर्थयात्रा के मार्गों को खोलना आदि। ये एक साझा अतीत के धार्मिक और सांस्कृतिक स्थल हैं जो वर्तमान में भी अस्तित्व में हैं। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत स्थित कटास राज मंदिर परिसर ऐसा ही एक उदाहरण है। इसका संबंध महाभारत काल से है। इसमें एक पवित्र सरोवर है। इसके अतिरिक्त बलूचिस्तान में हिंगलाज माता का मंदिर सहित अनेक प्राचीन हिंदू, बौद्ध और सिख तीर्थस्थल आज भी पाकिस्तान में विद्यमान हैं। इन तीर्थस्थलों के अतिरिक्त दोनों देशों की भाषाएँ, व्यंजन, संगीत और पर्व भी सीमा को जोड़ने का कार्य करते हैं।

इसे अनदेखा न करें

भारत और पाकिस्तान के मध्य 'करतारपुर कॉरिडोर' एक वीजा-मुक्त सीमा-पार करने का मार्ग है। इसे भारतीय तीर्थयात्रियों को पाकिस्तान के करतारपुर में 'गुरुद्वारा दरबार साहिब' (श्री करतारपुर साहिब) जाने की अनुमति देने के लिए निर्मित किया गया है (चित्र 2.6)। इस कॉरिडोर से यात्रा करने वाले तीर्थयात्रियों को वीजा की आवश्यकता नहीं होती है। केवल एक अनुमति-पत्र (परमिट) ही पर्याप्त होता है, जिससे हजारों लोगों के लिए यात्रा

© NCERT not to be republished

सुगम हो जाती है। इस गुरुद्वारे का अत्यंत धार्मिक महत्त्व है क्योंकि यह सिख धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव का अंतिम निवास स्थल है। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम 18 वर्ष यहीं व्यतीत किए थे।

दशकों तक पंजाब के 'डेरा बाबा नानक' स्थल की सीमा के समीप लगाए गए दूरबीन की सहायता से भारतीय श्रद्धालु इस पवित्र स्थल के दर्शन केवल दूर से ही कर पाते थे। इस कॉरिडोर का विचार सर्वप्रथम 1990 के दशक में प्रस्तावित किया गया था, परंतु वास्तव में 2019 में ही यह मार्ग प्रारंभ किया जा सका। गुरु नानक की 550वीं जयंती के अवसर पर इस कॉरिडोर को आधिकारिक रूप से खोला गया।

क्या 'करतारपुर कॉरिडोर' शांति और संवाद की संभावित प्रगति के लिए एक आदर्श हो सकता है?

चित्र 2.6 — करतारपुर साहिब गुरुद्वारे का एक दृश्य

© NCERT not to be republished

एक नवनिर्मित पड़ोसी राष्ट्र

भारत और बांग्लादेश के मध्य एक स्थायी संबंध है जो एक साझा इतिहास, संस्कृति और भाषा से बना है। जैसा कि हम अग्रिम कक्षाओं में पढ़ेंगे कि 'इतिहास' में **बांग्लादेश** (जो पहले 'पूर्वी पाकिस्तान' था) का जन्म 1971 में भारत और पाकिस्तान के मध्य हुए युद्ध के परिणामस्वरूप हुआ और यहाँ की भाषा बांग्ला है जो बांग्लादेश और भारत के पश्चिम बंगाल राज्य की एक प्रचलित भाषा है।

दोनों देशों के मध्य स्थलीय सीमा (चित्र 2.7) भारत-चीन की अंतरराष्ट्रीय सीमा से भी लंबी है। यह सीमा पश्चिम-बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम राज्यों के साथ-साथ चलती है। भारत और बांग्लादेश गंगा और ब्रह्मपुत्र से निकलने वाली कई

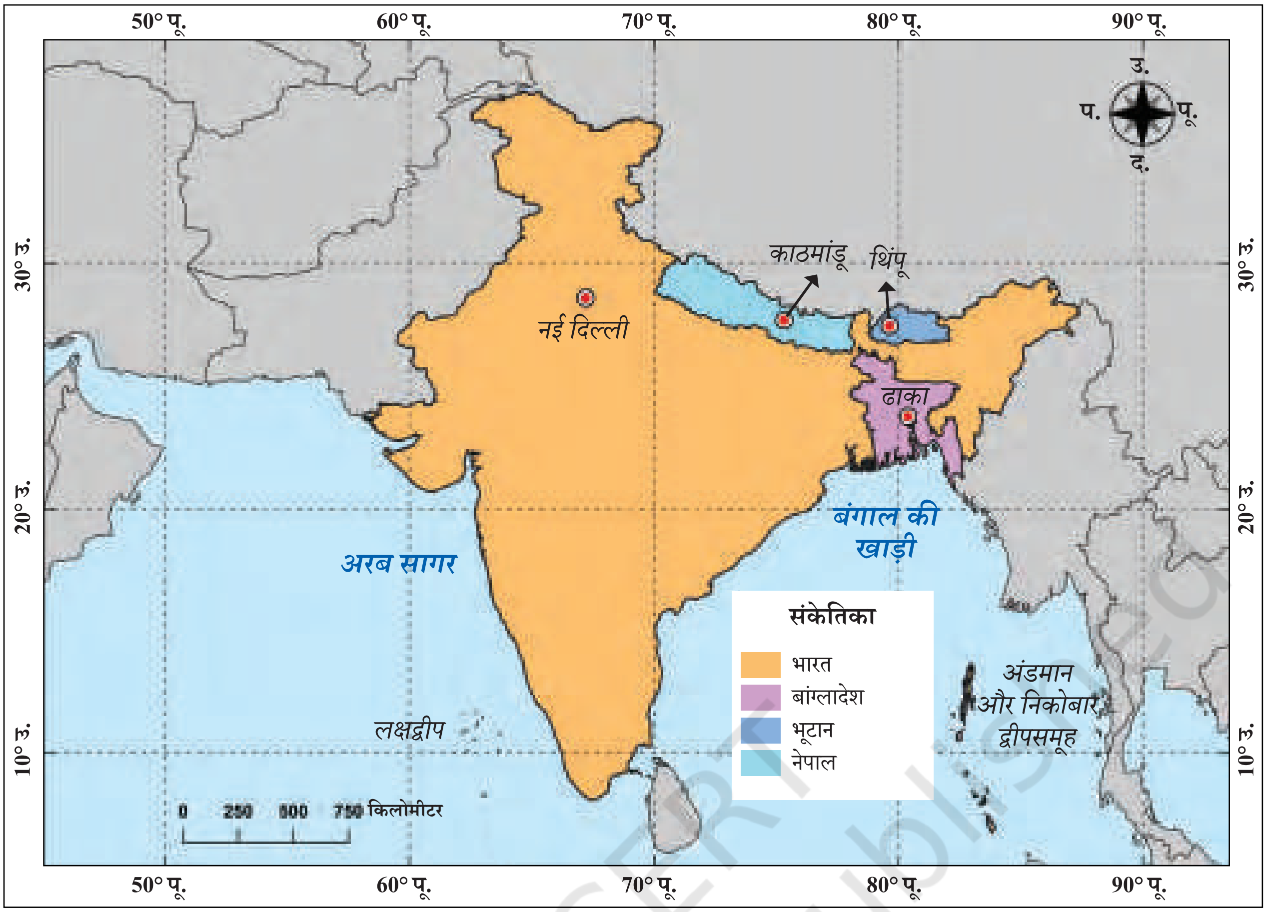

चित्र 2.7 — भारत, बांग्लादेश, नेपाल और भूटान

सीमा-पार नदी प्रणालियों को भी साझा करते हैं। ये नदियाँ दोनों देशों में करोड़ों लोगों की कृषि, मत्स्यपालन, परिवहन और आजीविका में एक प्रमुख भूमिका निभाती हैं।

भारत और बांग्लादेश ने सुदृढ़ राजनयिक, आर्थिक, रणनैतिक और सांस्कृतिक सहयोग के माध्यम से अपने ऐतिहासिक संबंधों को सशक्त किया है, जिससे उनका संबंध दक्षिण-एशिया में सबसे महत्त्वपूर्ण द्विपक्षीय संबंधों में से एक बन गया है।

चित्र 2.8 — सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान में विश्व के सबसे बड़े मैंग्रोव वन का एक दृश्य। इस वन का लगभग दो-तिहाई भाग बांग्लादेश में है और शेष भारत में है।

© NCERT not to be republished

दोनों देश समुद्री सीमा भी साझा करते हैं जिसके कारण उनका एक साझा समुद्री वातावरण भी है। सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान (चित्र 2.8) एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है। इसका संरक्षण और प्रबंधन दोनों पड़ोसी राष्ट्रों द्वारा समन्वित रूप से किया जाता है। यह क्षेत्र बंगाल टाइगर (बाघ) और अन्य अनेक प्रजातियों का निवास स्थल होने के कारण जैव विविधता के लिए तो महत्त्वपूर्ण है ही, साथ ही यह प्राकृतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह चक्रवातों के विरुद्ध एक प्राकृतिक अवरोध के रूप में कार्य करता है जिससे जलवायु सहनशीलता बढ़ती है। हालाँकि, वैश्विक तापन और जलवायु परिवर्तन के कारण विशेषज्ञों का अनुमान है कि आने वाले वर्षों में बांग्लादेश को बढ़ते समुद्र स्तर और तीव्र चक्रवातों के प्रभावों का सामना करना पड़ेगा। इससे बहुत से लोगों के निवास स्थल नष्ट होने और उनकी आजीविका के प्रभावित होने की संभावना है।

हिमालय की गोद में

हिमालय की गोद में स्थित **नेपाल** की भारत के साथ एक लंबी और मुक्त सीमा है, जो उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और सिक्किम राज्यों तक विस्तृत है (चित्र. 2.7)। इस भौगोलिक निकटता ने सदियों से दोनों देशों के मध्य आपसी संबंध और सहयोग को संभव बनाया है और यह संबंध साझी विरासत, आध्यात्मिक जुड़ाव, सीमा-पार आवागमन और राजनैतिक साझेदारी से मजबूत हुआ है।

चित्र. 2.9 — काठमांडू स्थित पशुपतिनाथ मंदिर, जहाँ शिव की उपासना, पशुओं के रक्षक के रूप में की जाती है।

© NCERT not to be republished

सांस्कृतिक दृष्टि से भारत और नेपाल के मध्य अत्यंत घनिष्ठ संबंध हैं। दोनों देशों के श्रद्धालु नियमित रूप से सीमा-पार पवित्र तीर्थ स्थलों की यात्रा करते हैं। काठमांडू स्थित पशुपतिनाथ मंदिर (चित्र. 2.9), एक प्रमुख हिंदू तीर्थ स्थल है जहाँ प्रतिवर्ष हजारों भारतीय श्रद्धालु दर्शन हेतु आते हैं। दशईं (दशहरा), तिहार (दीपावली) और होली जैसे पर्व दोनों देशों में समान हर्ष, उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाए जाते हैं। ये साझा आध्यात्मिक परंपराएँ जन-संपर्क को सुदृढ़ करती हैं और पारस्परिक सांस्कृतिक सम्मान की समृद्ध परंपरा को प्रतिबिंबित करती हैं।

राजनैतिक स्तर पर भारत और नेपाल के मध्य घनिष्ठ कूटनीतिक संबंध हैं, जिनका प्रमुख आधार 1950 की शांति और मैत्री संधि है। यह संधि मुक्त सीमाओं, व्यक्तियों और वस्तुओं के मुक्त आवागमन, रक्षा-नीति और विदेश-नीति जैसे क्षेत्रों में सहयोग का प्रावधान करती है। सीमा-पार प्रवासन और व्यापार भारत-नेपाल संबंधों का एक और महत्त्वपूर्ण पक्ष है। मुक्त सीमा नीति नागरिकों को बिना पासपोर्ट एवं बिना वीजा के सुगमता से सीमा-पार करने की अनुमति प्रदान करती है, जिससे दोनों राष्ट्रों के लोग शिक्षा, स्वास्थ्य-सेवा, रोजगार और पारिवारिक संबंध बनाए रख सकते हैं। सक्रिय व्यापार एवं जीवंत बाजारों के माध्यम से अनेक सीमावर्ती उपनगरों के दैनिक जीवन में यह पारस्परिक गहन निर्भरता प्रदर्शित होती है।

भारत नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है, जो उसको पेट्रोलियम, दवाइयों, खाद्य सामग्री और निर्मित उत्पादों जैसी आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति करता है। इसके बदले नेपाल कृषि उत्पाद, हस्तशिल्प और वस्त्रों का निर्यात करता है। ये आदान-प्रदान न केवल दोनों राष्ट्रों के आर्थिक विकास में सहायता करता है अपितु सीमा-क्षेत्र में रहने वाले समुदायों के सामाजिक और आर्थिक एकीकरण को भी सुदृढ़ करता है। भारत-नेपाल संबंध पड़ोसियों के मध्य सहयोग का एक विशिष्ट उदाहरण है, जो एक समान इतिहास, आस्था, भूगोल और क्षेत्रीय सद्भाव के लिए प्रतिबद्धता से बना है।

इसे अनदेखा न करें

'मुक्त सीमा' क्या है? इससे अभिप्राय है कि दो देशों के लोग बिना वीजा या पासपोर्ट के सीमा-पार आवागमन कर सकते हैं। इससे सीमा के दोनों ओर रहने वाले परिवार आपस में जुड़े रह सकते हैं और वहाँ के लोग कार्य, शिक्षा, व्यापार या धार्मिक यात्राओं के लिए सुगमता से आवागमन कर सकते हैं। यद्यपि, भारत और नेपाल मिलकर यह सुनिश्चित करते हैं कि मुक्त सीमा सुरक्षित रहे और इसका दुरुपयोग न हो; यह व्यवस्था दोनों देशों के मध्य विश्वास एवं मित्रता का प्रतीक है।

© NCERT not to be republished

‘थंडर ड्रैगन की भूमि’

भूटान जिसे वहाँ के निवासी ‘ड्रुक्युल’ या ‘थंडर ड्रैगन की भूमि’ कहते हैं, भारत और चीन के मध्य स्थित एक छोटा एवं स्थलरुद्ध (चारों तरफ से भूमि से घिरा) हिमालयी राज्य है। भारत के साथ भूटान की सीमा सिक्किम, पश्चिम बंगाल, असम और अरुणाचल प्रदेश राज्यों से मिलती है (चित्र 2.7 देखें)। शताब्दियों से भूटान ने भारत के साथ सुदृढ़ आर्थिक और सांस्कृतिक संबंध बनाए रखे हैं।

इसे अनदेखा न करें

चित्र. 2.10 — भूटान का राजचिह्न। इसमें अंकित ड्रैगन, ‘थंडर ड्रैगन की भूमि’ का प्रतीक है। इस प्रतीक में अंकित और कौन-से तत्त्वों से आप परिचित हैं?

भूटान से अनेक महत्त्वपूर्ण नदियाँ उद्गमित होकर भारत में प्रवाहित होती हैं। ये नदियाँ कृषि के लिए तो आवश्यक हैं ही; साथ ही ये जल-विद्युत के उत्पादन का आधार भी हैं, जो दोनों देशों के मध्य सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों में से एक है। कुछ बड़ी विद्युत परियोजनाएँ भूटान के आर्थिक विकास में योगदान देती हैं और भारत की नवीकरणीय ऊर्जा की आपूर्ति करती हैं।

चित्र 2.11 — भारत के सहयोग से निर्मित ‘ताला जलविद्युत परियोजना’, जिसे 2008 में दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों द्वारा भूटान और भारत के लोगों को समर्पित किया गया।

भूटान और भारत के संबंधों को सांस्कृतिक एवं धार्मिक निकटता और अधिक सुदृढ़ बनाती है। दोनों राष्ट्रों के बौद्ध धर्म की साझी विरासत में निहित ये संबंध गहन आध्यात्मिक आधार पर निर्भर हैं। भूटान के तीर्थयात्री प्रायः भारत में बोधगया, राजगीर, नालंदा, उदयगिरि और सिक्किम से पवित्र बौद्ध स्थलों पर जाते हैं। सामान्य संवंत की आठवीं शताब्दी में भूटान में बौद्ध धर्म

© NCERT not to be republished

की वज्रयान शाखा का आरंभ करने वाले 'पद्मसंभव' (गुरु रिनपोछे) जैसे भारतीय बौद्ध गुरु वर्तमान में भी भूटान की धार्मिक पहचान का केंद्र हैं। वास्तव में, भूटान के राजचिह्न (चित्र 2.10) और ध्वज में अंकित ड्रैगन को 'बुद्ध की शिक्षाओं की गर्जनात्मक वाणी' का प्रतीक माना जाता है।

भारत और भूटान के संबंध पारस्परिक सम्मान, रणनैतिक सहयोग और सांस्कृतिक साम्यता से युक्त हैं। दोनों देशों के संबंध और सहभागिता दर्शाती है कि साझी भौगोलिक स्थिति, आध्यात्मिक धरोहर और आर्थिक सहयोग किस प्रकार दीर्घकालिक और शांतिपूर्ण क्षेत्रीय संबंधों को सुदृढ़ कर सकते हैं।

इसे अनदेखा न करें

प्राचीन भारत में बौद्ध धर्म की तीन प्रमुख शाखाएँ विकसित हुईं, जो बाद में अनेक पड़ोसी देशों में फैलीं—

→ **थेरवाद**— इसे 'वरिष्ठों का संप्रदाय' भी कहा जाता है। यह लगभग तीसरी शताब्दी सा.सं.पू. विकसित हुआ। इसे महात्मा बुद्ध की मूल शिक्षाओं के सबसे निकट माना जाता है और वर्तमान में इसके अनुयायी प्रमुख रूप से श्रीलंका और दक्षिण-पूर्व एशिया, विशेषकर थाईलैंड एवं म्यांमार में हैं।

→ **महायान**— यह पहली शताब्दी सा.सं.पू. के आस-पास अस्तित्व में आया। इसमें बुद्ध की दैवीय प्रकृति और विभिन्न रूपों में मार्गदर्शन की अवधारणा जैसे नए विचार सम्मिलित हुए। यह शाखा चीन, जापान और कोरिया सहित अनेक देशों में फैली, जहाँ इसकी अनेक उपशाखाएँ भी विकसित हुईं जिनमें से एक बौद्धधर्म की जेन परंपरा है।

→ **वज्रयान अर्थात हीरक वाहन**— इसे सामान्यतया 'तांत्रिक बौद्ध धर्म' के नाम से भी जाना जाता है। सा.सं. की छठी शताब्दी के आस-पास यह महायान की शाखा के रूप में उभरा। इसने विशेष विधियों और गुप्त क्रियाओं जैसी विशिष्ट साधनाओं पर बल दिया, जैसे— मंत्रों, मंडलों (पवित्र आकृतियों) तथा बुद्ध और बोधिसत्वों की ध्यानरूप मूर्ति, चित्र आदि। सा.सं. की सातवीं शताब्दी के आस-पास तिब्बती बौद्ध धर्म का विकास इसी शाखा से हुआ।

वर्तमान में भी बौद्ध धर्म की इन तीनों शाखाओं के अनुयायी देश के कुछ भागों, विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्र में हैं।

© NCERT not to be republished

चित्र 2.12 — 'टाइगर नेस्ट', भूटान की पारो घाटी के ऊपर पर्वत की ढाल पर स्थित एक बौद्ध मठ

इसे अनदेखा न करें

भूटान ने सकल घरेलू उत्पाद जैसी प्रचलित पारंपरिक अवधारणाओं की तुलना में अपने राष्ट्र की प्रगति के आकलन के लिए 'सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता सूचकांक' की अवधारणा विकसित की जो अधिक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती है। इसमें संधारणीयता, सुशासन और संस्कृति के संवर्धन जैसे विचार सम्मिलित हैं। भूटान इस सूचकांक के आधार पर समय-समय पर अपनी प्रगति का मूल्यांकन करता है।

दक्षिण-पूर्व एशिया के लिए भारत का प्रवेश-द्वार

भारत और **म्यांमार** (जिसे पूर्व में 'बर्मा' के नाम से जाना जाता था) के मध्य राजनैतिक अस्थिरता के दौर के बाद भी ऐतिहासिक, नृजातीय और सांस्कृतिक संबंधों पर आधारित चिरकालीन संबंध रहे हैं। बौद्ध धर्म का जन्मस्थल होने के फलस्वरूप भारत का म्यांमार के लोगों के लिए विशेष आध्यात्मिक महत्त्व है, वहाँ से अनेक श्रद्धालु तीर्थयात्रा के लिए भारत आते हैं। दोनों देश स्थलीय सीमा के साथ-साथ बंगाल की खाड़ी में समुद्री सीमा से भी जुड़े हुए हैं (चित्र 2.20)। भारत के उत्तर-पूर्वी राज्य अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर और मिजोरम म्यांमार के साथ स्थल-सीमा को साझा करते हैं, जो सीमा-पार संवाद और सहयोग को सरल बनाती है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान और क्षेत्रीय संपर्क दोनों राष्ट्रों के मध्य संबंधों की पहल के आधार हैं।

चित्र 2.13 — टियो नदी के बाएँ तट पर म्यांमार और दाएँ तट पर भारत (मिजोरम)। यह नदी दोनों देशों के मध्य अंतरराष्ट्रीय सीमा का एक भाग है (2008 में लिया गया चित्र)।

म्यांमार दक्षिण-पूर्व एशिया के लिए भारत का एक महत्त्वपूर्ण प्रवेश द्वार भी है। 2018 के स्थल सीमा-पारगमन समझौतों ने दोनों राष्ट्रों के मध्य सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए सीमा-पार आवागमन को सुगम और व्यापार को प्रोत्साहित किया। इसने लोगों के मध्य पारस्परिक संबंधों और संपर्कों को गहन बनाया है, विशेषतः पूर्वोत्तर भारत और म्यांमार के मध्य। यद्यपि, विगत कुछ वर्षों में इन क्षेत्रों में संघर्षों के फलस्वरूप स्थल सीमा-पार मुक्त आवागमन पर कुछ प्रतिबंध भी लगाए गए हैं।

इसे अनदेखा न करें

चित्र 2.14 — आनंद मंदिर, बागान

कुछ वर्ष पूर्व, बागान में भूकंप से क्षतिग्रस्त हुए आनंद मंदिर सहित अन्य ऐतिहासिक स्मारकों के पुनरुद्धार में भारत ने सहायता की। भारत ने म्यांमार के यांगून में श्वेदागोन पगोडा को सारनाथ बुद्ध की प्रतिमा की एक 16 फुट की प्रतिकृति भी भेंट की।

© NCERT not to be republished

चित्र 2.15 — जारंज से डेलाराम तक अफगानिस्तान का राष्ट्रीय राजमार्ग 1, यह एशियाई राजमार्ग नेटवर्क 1 (ए.एच. 1) से जुड़ता है। भारत में एन.एच. 44 के कुछ भाग भी ए.एच. 1 का भाग हैं।

स्थलरुद्ध पड़ोसी राष्ट्र

अफगानिस्तान, दक्षिण-मध्य एशिया में एक स्थलरुद्ध बहुनृजातीय देश है। इसका भारत के साथ कभी प्रत्यक्ष स्थल संपर्क था किंतु 1947 में पाकिस्तान के निर्माण ने दोनों देशों के मध्य आवागमन को जटिल बना दिया है (चित्र 2.5)। इन भू-राजनैतिक चुनौतियों के बाद भी भारत और अफगानिस्तान ने कुल मिलाकर साझा इतिहास और संस्कृति के साथ-साथ महत्त्वपूर्ण सामरिक हितों के आधार पर घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखे हैं।

दोनों राष्ट्रों का संबंध प्राचीन काल से चला आ रहा है, जब ऐतिहासिक उत्तरापथ व्यापार मार्ग अफगानिस्तान से होता हुआ गंगा के मैदानों को मध्य एशिया से जोड़ता था। इस मार्ग के माध्यम से शताब्दियों तक वस्तुओं, धर्म और विचारों का आदान-प्रदान होता रहा। गांधार (आधुनिक कंधार) से लेकर तक्षशिला (वर्तमान पाकिस्तान), वाराणसी और पाटलिपुत्र जैसे प्रमुख भारतीय नगरों तक फैला यह महान सांस्कृतिक राजमार्ग बौद्ध धर्म, हिंदू धर्म, कला और दर्शन के प्रसार का माध्यम बना।

सा.सं. की सातवीं शताब्दी में इस्लाम के प्रसार से पूर्व, अफगानिस्तान बौद्ध और हिंदू संस्कृति का एक समृद्ध केंद्र था। कपिश और जाबुल जैसे राज्यों में भारतीय शासन प्रणालियों के अंश दिखाई देते हैं। अफगानिस्तान की पहाड़ियों में उत्कीर्ण की गई बामियान की विशाल बुद्ध प्रतिमाएँ भारत से 'महायान' बौद्ध धर्म की पहुँच के शक्तिशाली प्रतीक के रूप में खड़ी थीं, जो दोनों क्षेत्रों के मध्य घनिष्ठ सभ्यतागत संबंधों को दर्शाती थीं; दुर्भाग्यवश, उन्हें 2001 में नष्ट कर दिया गया।

© NCERT not to be republished

हाल के दशकों में भारत और अफगानिस्तान के लोगों के मध्य प्रगाढ़ संबंध स्थापित हुए हैं। भारत ने अफगानिस्तान में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और आधारभूत संरचना के विकास में सहयोग दिया है, जिसमें अफगान संसद भवन और जारंज-डेलाराम राजमार्ग का निर्माण सम्मिलित है। उतार-चढ़ाव के बाद भी, ये पहलें और दीर्घकालिक मैत्री पारस्परिक सम्मान की साझा धरोहर को आगे बढ़ाने की अभिलाषा को प्रतिबिंबित करती हैं।

भारत के समुद्री पड़ोसी

सा.सं. की कुछ शताब्दियों पूर्व से भारतीय व्यापारी स्वर्ण और अन्य मूल्यवान संसाधनों की खोज में दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों की यात्रा कर रहे थे। वे प्रायः जावा, सुमात्रा और मलय द्वीपों की नियमित यात्रा करते थे। ये यात्राएँ इतनी अधिक थीं कि इन स्थानों को 'सुवर्णभूमि' ('सोने की भूमि') या 'सुवर्णद्वीप' ('सोने का द्वीप') के नाम से जाना जाने लगा। आइए, हम अपने राष्ट्र के समीपवर्ती समुद्री पड़ोसियों की चर्चा से आरंभ करते हैं।

इसे अनदेखा न करें

भारत के कई पड़ोसी देशों ने 1985 में एक साथ मिलकर आपसी हितों, सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक प्रगति को बढ़ावा देने के लिए सार्क (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन) नामक एक संघ का गठन किया।

अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका इस संघ के सदस्य हैं। सार्क का लक्ष्य विज्ञान, शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य क्षेत्रों में विकास के लिए संसाधनों के साझा उपयोग को प्रोत्साहित करना है। यद्यपि कुछ सदस्य देशों के मध्य राजनैतिक तनाव ने इसके कार्यों को प्रायः बाधित किया है।

सार्क के अतिरिक्त हिंद महासागर क्षेत्र में विभिन्न उद्देश्यों से गठित किए गए अन्य क्षेत्रीय संगठन भी विद्यमान हैं।

भारत का निकटतम समुद्री पड़ोसी

भारत के दक्षिण-पूर्व में स्थित **श्रीलंका** एक द्वीपीय देश है। दोनों देशों के मध्य एक संकीर्ण समुद्री पट्टी है, जिसे पाक जलडमरूमध्य के नाम से जाना जाता है। श्रीलंका और भारत के सबसे निकटतम बिंदु पर, दोनों देशों के मध्य की दूरी मात्र 32 किलोमीटर है। यह निकटता दोनों देशों को लंबे समय से सांस्कृतिक संपर्क, व्यापार और आपसी सहयोग

© NCERT not to be republished

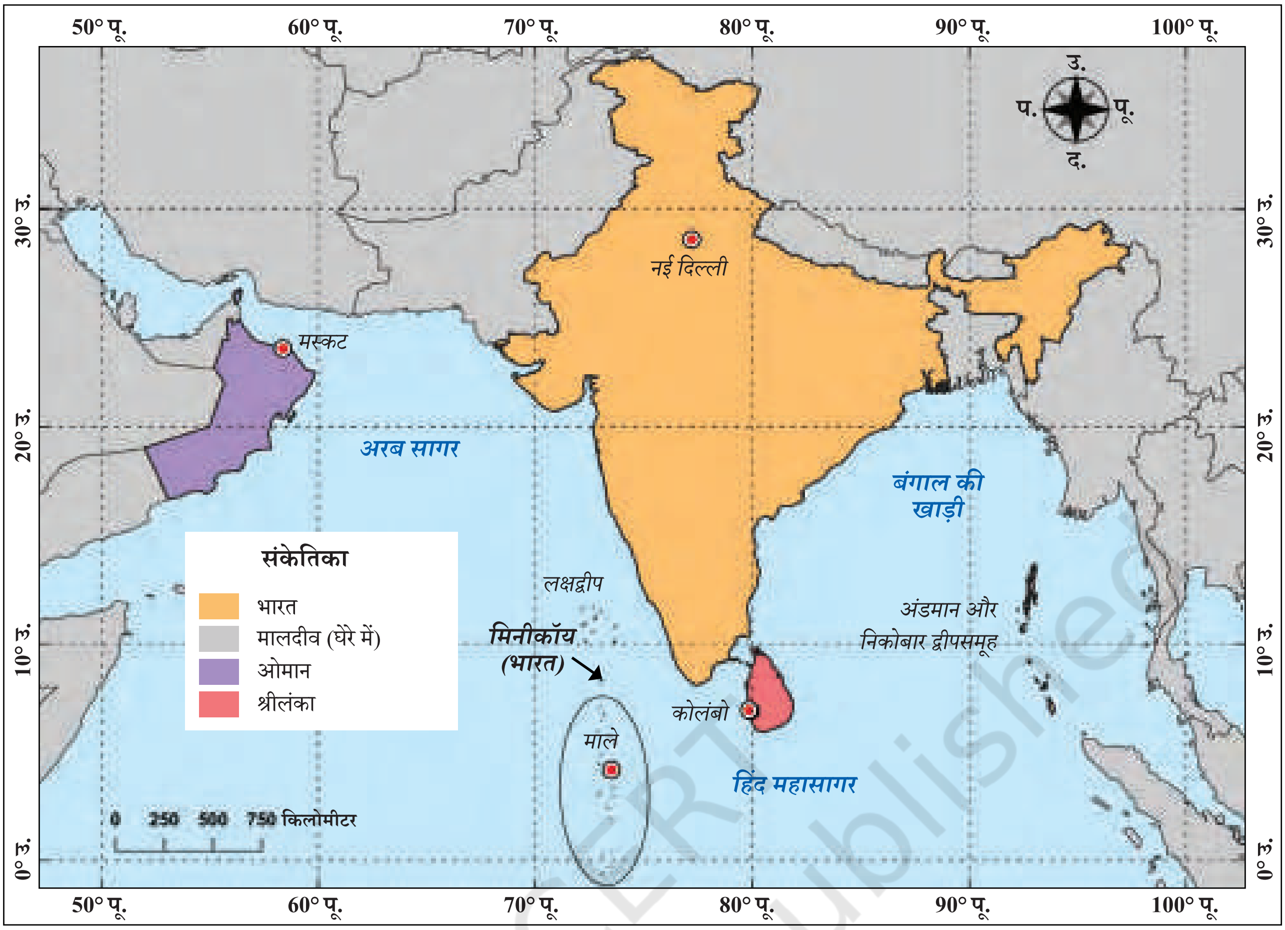

चित्र 2.16 — भारत, श्रीलंका, मालदीव (घेरे में) और ओमान

से जोड़ती आई है। सा.सं. की तीसरी शताब्दी पूर्व में सम्राट अशोक के पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा द्वारा बौद्ध धर्म को श्रीलंका में प्रसारित किया गया। विशेषतः अपने दो महाकाव्यों के माध्यम से हिंदू धर्म भी वहाँ पहुँचा। वर्तमान में भी, दोनों देश इस साझा आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत का उत्सव मनाते हैं।

यद्यपि, ये संबंध दोनों राष्ट्रों में सदैव सहज नहीं रहे हैं। 1980 के दशक के मध्य से लगभग 2010 तक श्रीलंका में गृह युद्ध चल रहा था। यह एक कठिन समय था। यह युद्ध मुख्य रूप से 'सिंहली' बहुसंख्यक समुदाय (जिनकी भाषा सिंहली है) और तमिल अल्पसंख्यकों के मध्य था, जिनके भारत के साथ घनिष्ठ सांस्कृतिक संबंध हैं। युद्ध के फलस्वरूप अनेक तमिल परिवारों को श्रीलंका छोड़कर दक्षिण भारत, विशेषकर तमिलनाडु की ओर पलायन करना पड़ा।

भारत और श्रीलंका के मध्य एक बहुआयामी साझेदारी है, जो सांस्कृतिक निकटता, ऐतिहासिक संबंधों, आर्थिक और रणनैतिक सहयोग से जुड़ी है। यह संबंध लोगों के मध्य आदान-प्रदान, क्षेत्रीय समूहों एवं दक्षिण एशिया में शांति और विकास के लिए साझा लक्ष्यों के माध्यम से निरंतर सुदृढ़ हो रहा है।

चित्र 2.17 — श्रीलंका में सूर्यास्त के समय खंभों पर खड़े पारंपरिक मछुआरे

चित्र 2.18 — श्रीलंका के चमकीले रंगों के पारंपरिक लकड़ी के मुखौटे; यह संभव है कि इस परंपरा का संबंध भारत, विशेषकर दक्षिण भारत की समान मुखौटा-निर्माण परंपराओं से हो।

द्वीपों का देश

भारत और **मालदीव** के संबंध भूगोल, इतिहास और संस्कृति के आधार पर हैं। मालदीव, में 1,100 से अधिक छोटे द्वीप हैं। यह मिनिकॉय, (भारत के केंद्रशासित प्रदेश लक्षद्वीप) से केवल लगभग 130 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस निकटता के कारण हिंद महासागर में व्यापार और सुरक्षा की दृष्टि से यह भारत का एक महत्त्वपूर्ण पड़ोसी है (चित्र 2.16 और 2.20)।

शताब्दियों पूर्व समुद्री व्यापार के माध्यम से दोनों देशों में सांस्कृतिक संबंध रहे हैं। प्राचीन बौद्ध मंदिरों और शिलालेखों के पुरातात्विक साक्ष्यों से यह सिद्ध होता है कि बौद्ध धर्म मालदीव में बहुत पहले ही पहुँच गया था। तमिलनाडु और केरलम के प्रभाव से इन द्वीपों पर भाषा, व्यंजन और विविध कलाएँ विकसित हुईं। नारियल की करी और 'रोशी' जैसे मालदीवीय व्यंजन दक्षिण भारतीय स्वाद को प्रतिबिंबित करते हैं, जबकि 'बोडुबेरु नृत्य' तमिल लोकगीत को प्रतिध्वनित करते हैं। धिवेही मालदीव की आधिकारिक भाषा है, जिसे मालदीवियन भी कहा जाता है। इसकी शब्दावली और नाव बनाने की तकनीकें भी दक्षिण भारत से इसके जुड़ाव को दर्शाती हैं।

1965 में स्वतंत्र होने के उपरांत मालदीव को मान्यता देने वाले प्रारंभिक देशों में भारत भी सम्मिलित था। विगत कुछ वर्षों में, दोनों देशों ने रक्षा, व्यापार और आपदा राहत सहित विभिन्न क्षेत्रों में सुदृढ़ संबंध स्थापित किए हैं। 2004 की सुनामी, माले (मालदीव की राजधानी) में 2014 के जल संकट और कोविड-19 महामारी के समय भारत की त्वरित सहायता ने इन संबंधों को और सुदृढ़ किया है। इन कार्यों ने संकट के समय त्वरित प्रतिक्रिया देने की भारत की क्षमताओं को रेखांकित किया और इस क्षेत्र के तत्काल विश्वसनीय सहयोगी के रूप में उसकी भूमिका को और अधिक सुदृढ़ किया है।

इसे अनदेखा न करें

मालदीव की भाषा धिवेही शताब्दियों से भारतीय संस्कृतियों के संपर्क के परिणामस्वरूप समृद्ध मिश्रण का उदाहरण है। इसमें संस्कृत, प्राकृत, तमिल, मलयालम और हिंदी से शब्द लिए गए हैं। राज्जे (राजा) और मास (मछली) संस्कृत शब्दों राजा और मत्स्य के समान हैं, जबकि धोनी (नाव) और कुकुलु (मुर्गा) की उत्पत्ति तमिल और मलयालम से जुड़ी है। बॉलीवुड के प्रभाव से 'फिल्म' जैसे आधुनिक हिंदी के शब्द भी दैनिक जीवन के प्रचलन में आ गए हैं। धिवेही मालदीव के समृद्ध इतिहास को एक समुद्री केंद्र के रूप में दर्शाता है, जो भारतीय भाषाई और सांस्कृतिक प्रभावों से निर्मित है।

द्वीपीय राष्ट्र होने के कारण मालदीव जलवायु में हो रहे परिवर्तन के प्रभावों के फलस्वरूप आज बहुत असुरक्षित है। विशेषतः समुद्र के जल-स्तर में वृद्धि, जो इस शताब्दी के अंत तक एक मीटर तक पहुँच सकती है, से इसके अनेक द्वीपों के आंशिक रूप से डूबने की संभावना है।

यह राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन का सदस्य है। यह एक भारतीय पहल है (हम कक्षा 8 में इस पर पुनः चर्चा करेंगे), जो सौर ऊर्जा पर अनुसंधान प्रौद्योगिकी साझा

© NCERT not to be republished

2.19 — (बाएँ) मालदीव के मुख्य द्वीपों का एक उपग्रह दृश्य (हल्की रूपरेखाएँ देखें), इसमें भारत का दक्षिणी सिरा ऊपरी दाएँ कोने में दिखाई दे रहा है। (दाएँ) वैश्विक तापन के फलस्वरूप बढ़ते समुद्री जल-स्तर के खतरे पर ध्यान आकर्षित करने के लिए मालदीव के राष्ट्रपति और मंत्रियों के मंत्रिमंडल ने 2009 में जल की सतह से 4 मीटर की गहराई में एक बैठक की।

करने से संबंधित है। संधारणीय विकास की दिशा में यह संयुक्त प्रयास दोनों देशों के मध्य दीर्घकालिक संबंधों का एक और उदाहरण है।

द्वारका से द्वारवती और अयोध्या से अयुथ्या तक

भारत और **थाईलैंड** समुद्री मार्ग और क्षेत्रीय भूगोल के माध्यम से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। समुद्री सीमा साझा करने वाले (चित्र 2.20) ये दोनों देश प्राचीन काल से व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से जुड़े हुए हैं। सा.सं. की तीसरी शताब्दी पूर्व के प्रारंभ से ही भारतीय व्यापारियों और विद्वानों ने वर्तमान में थाईलैंड कहे जाने वाले क्षेत्र की सामुद्रिक यात्राएँ कीं, मसालों और वस्त्रों जैसी सामग्रियों का आदान-प्रदान किया और साथ ही उन्होंने धार्मिक और सांस्कृतिक विचारों के माध्यम से इस क्षेत्र को गहनता से प्रभावित किया।

वास्तव में, भारतीय संस्कृति का प्रभाव बाद के 'थाई राज्यों' के नामों में भी परिलक्षित होता है। 'द्वारवती संस्कृति' सा.सं. की छठवीं से ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य विकसित हुई। यह संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ है– 'द्वारों से युक्त स्थान'। यह स्पष्टतः महाभारत में वर्णित कृष्ण की द्वारका नगरी को संदर्भित करता है।

© NCERT not to be republished

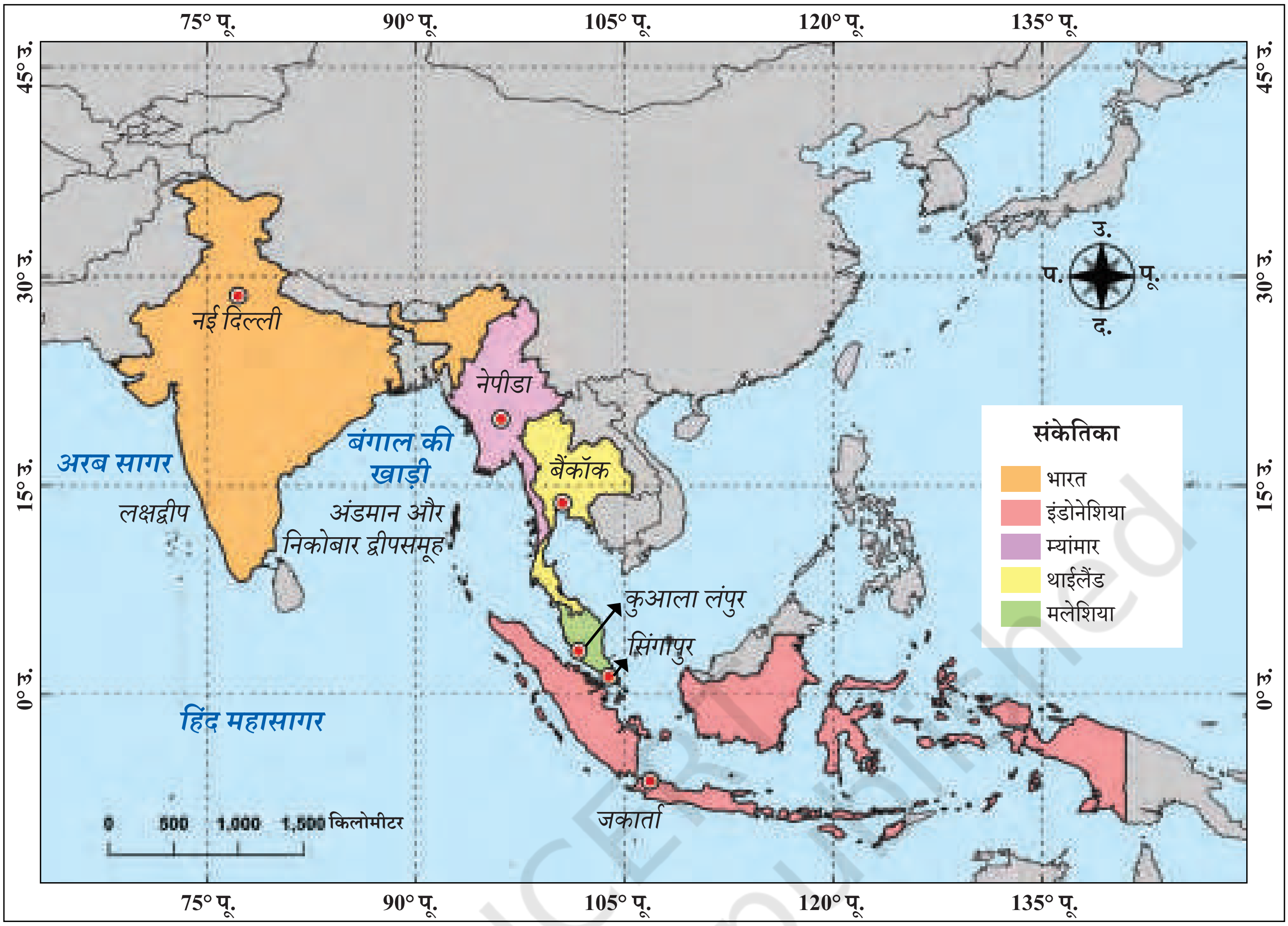

चित्र 2.20 — भारत, म्यांमार, थाईलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, इंडोनेशिया

© NCERT not to be republished

बहुत समय पश्चात 1351 में स्थापित अयुथ्या साम्राज्य का नाम रामायण के अनुसार राम के जन्म-स्थान प्राचीन भारतीय नगर अयोध्या के नाम पर रखा गया था। भारतीय परंपराओं को दर्शाने वाले इन स्थानों के नामों का यह चयन थाईलैंड के इतिहास और संस्कृति पर भारतीय सभ्यता के गहरे प्रभाव को प्रदर्शित करता है।

इसे अनदेखा न करें

वर्तमान 'चक्री' राजवंश के सभी राजाओं के नाम राम के नाम पर ही आधारित हैं; उदाहरण के लिए, वर्तमान राजा राम दशम हैं (अर्थात, इस राजवंश में दसवें राजा राम)।

बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म की साझा विरासत से भारत और थाईलैंड के सांस्कृतिक संबंध और सुदृढ़ हुए हैं। भारतीय भिक्षुओं, विद्वानों और ग्रंथों ने थाई समाज की धार्मिक और दार्शनिक नींव को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वहाँ 'थेरवाद बौद्ध धर्म'

का व्यापक रूप से पालन किया जाता है, तथापि हिंदू देवी-देवताओं का और भारतीय महाकाव्यों की कथाओं का प्रभाव वर्तमान में भी थाई समारोहों, नृत्यों, साहित्य तथा परंपरा आदि में दृष्टिगोचर होता है।

आइए पता लगाएँ

चित्र 2.21 — बैंकॉक हवाई अड्डे पर एक विशाल मूर्ति

चित्र 2.21 में प्रदर्शित किया गया दृश्य समुद्र मंथन की प्रसिद्ध हिंदू पौराणिक कथा का चित्रण है। इस कथा के अनुसार देवताओं (दाईं ओर) और असुरों (बाईं ओर) ने अमृत की खोज में क्षीर सागर को मथने के लिए मिलकर कार्य करने का निर्णय लिया, जिसमें वासुकि नाग का मंथन की रस्सी के रूप में प्रयोग किया गया और विष्णु (ऊपर) को इस कार्य की देखरेख करनी थी— उन्होंने असुरों को भ्रम में रखते हुए यह सुनिश्चित किया कि अमृत केवल देवताओं को ही मिले। हवाई पत्तन के आधिकारिक नाम 'सुवर्णभूमि हवाई पत्तन' पर भी ध्यान दें— यह आपको किसकी याद दिलाता है?

भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग शताब्दियों पूर्व के प्राचीन संबंधों को पुनर्जीवित और सुदृढ़ करने का एक आधुनिक प्रयास है। भारत के मणिपुर राज्य से म्यांमार होते हुए थाईलैंड तक फैला हुआ यह राजमार्ग स्थलीय संपर्क को सुदृढ़ करता है। यह क्षेत्रीय व्यापार को प्रोत्साहन देता है और संबंधित देशों के मध्य अधिक सहयोग का समर्थन भी करता है।

प्राचीन और आधुनिक दोनों तरह के संबंधों के माध्यम से, भारत और थाईलैंड दोनों राष्ट्र यह प्रदर्शित करते हैं कि भूगोल, इतिहास और साझा मूल्य कैसे देशों को स्थल और समुद्र के पार भी एक-दूसरे के निकट ला सकते हैं।

© NCERT not to be republished

मलय प्रायद्वीप

भारत और **मलेशिया** के मध्य संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से जुड़े रहे हैं, जिनका इतिहास दो हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन है। मलय प्रायद्वीप उस समय बंगाल की खाड़ी के पार समुद्री मार्गों के माध्यम से भारत के संपर्क में था (चित्र 2.20)। यहाँ भी प्रारंभिक काल से थाईलैंड की तरह हिंदू और बौद्ध सांस्कृतिक प्रभाव दृष्टिगत होते हैं। जैसे 'श्रीविजय साम्राज्य' ने सा.सं. की चौथी शताब्दी के आस-पास भारत की ब्राह्मी लिपि पर आधारित एक लिपि अपनाई। भले ही पंद्रहवीं शताब्दी तक इस्लाम यहाँ का प्रमुख धर्म बन गया था, ये प्रभाव आज भी मलेशियाई समाज में कला और साहित्य के माध्यम से दृष्टिगत होते हैं। उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में मुख्यतया दक्षिण भारत से बड़ी संख्या में भारतीय श्रमिक रबर के बागानों में मजदूर के रूप में कार्य करने के लिए मलेशिया आए थे। मलेशिया में भारतीय समुदाय आज भी प्रमुख है, जिसमें 9 प्रतिशत जनसंख्या भारतीय मूल की है।

वर्तमान में भारत मलेशिया के सबसे बड़े व्यापारिक भागीदारों में से एक है। ताड़ का तेल, ऊर्जा, आधारभूत संरचना और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में दोनों देशों के मध्य सहयोग है। दोनों देश रणनैतिक भागीदार भी हैं, जो क्षेत्रीय सुरक्षा और समुद्री स्थिरता पर मिलकर काम कर रहे हैं। विनिर्माण, सूचना प्रौद्योगिकी, अनुसंधान, पर्यटन और शिक्षा के क्षेत्रों में कार्य करने वाले अनेक भारतीय संगठनों ने मलेशिया की स्थानीय कंपनियों के साथ सहयोग स्थापित किया है, जिससे आर्थिक संबंध सुदृढ़ हुए हैं।

चित्र 2.22 — मलेशिया की राजधानी कुआला लंपुर में पेट्रोनास टावर्स। ये विश्व की सबसे ऊँची जुड़वाँ गगनचुंबी इमारतों में से एक हैं।

© NCERT not to be republished

‘लायन सिटी’

सिंगापुर का नाम ‘सिंगापुरम’ या ‘सिंहपुर’ से व्युत्पन्न माना जाता है, जो वर्तमान मलेशिया के दक्षिणी सिरे के पास स्थित एक प्राचीन राज्य का नाम था। थाईलैंड और मलेशिया की भाँति, सिंगापुर के भी भारत के साथ घनिष्ठ सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध थे। सा.सं. की कुछ शताब्दी पूर्व से ही बौद्ध भिक्षु और व्यापारी इस क्षेत्र में आते थे। बहुत उतार-चढ़ाव के पश्चात सिंगापुर ब्रिटिश उपनिवेश बना, उसके बाद मलेशिया का भाग रहा और अंतत: 1965 में यह एक स्वतंत्र राष्ट्र बना।

आइए पता लगाएँ

तमिल भाषा का सिंगापुर की आधिकारिक भाषाओं में से एक होना आपको दक्षिण भारत और सिंगापुर के मध्य संबंध के बारे में क्या संकेत देता है?

चित्र 2.23 — सिंगापुर की चार आधिकारिक भाषाओं— अंग्रेजी, मंदारिन, तमिल और मलय में लिखित एक संकेतपट्ट (साइनबोर्ड)

सिंगापुर नगरीय योजना और रख-रखाव के लिए एक मानक रहा है। वहाँ के नागरिक सड़कों को कचरा-मुक्त, स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सड़क पर कचरा फेंकने, नियमों का उल्लंघन करने या गलत ढंग से सड़क पार करने (जेवॉकिंग) पर कठोर आर्थिक दंड लगाया जाता है। नागरिकों के कल्याण पर केंद्रित इस नगर में उद्यान, पैदल पथ, छत उद्यान जैसी पर्यावरण-संवेदनशील व्यवस्थाएँ हैं।

जेवॉकिंग
यातायात नियमों का उल्लंघन करके सड़क पार करना या सड़क पर चलना।

सिंगापुर के भारत के साथ संबंध वर्तमान में भी विविध क्षेत्रों में सुदृढ़ हैं। हाल के वर्षों में यह द्वीपीय राष्ट्र भारत में सबसे बड़े विदेशी निवेशकों में से एक बन गया है (विशेषत: आधारभूत संरचना और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में)। अनेक भारतीय कंपनियों ने सिंगापुर में अपने कार्यालय स्थापित किए हैं। सिंगापुर में बड़ी संख्या में भारतीय पर्यटक आते हैं और यह उच्च शिक्षा के लिए भी भारतीय विद्यार्थियों के लिए प्रमुख स्थलों में से एक है।

कला से लेकर व्यंजन तक तथा धर्म जैसे सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी भारत की उपस्थिति यहाँ दिखाई देती है (वर्तमान में यहाँ बौद्ध धर्म का सबसे व्यापक रूप से पालन किया जाता है)। नृजातीय रूप से, सिंगापुर के लगभग नौ प्रतिशत निवासी भारतीय मूल के हैं,

© NCERT not to be republished

जिनमें से अधिकांश सिंगापुर के जिस क्षेत्र में रहते हैं, उसे 'लिटिल इंडिया' के नाम से जाना जाता है।

चित्र 2.24 — लिटिल इंडिया, सिंगापुर नगर का एक क्षेत्र

इंडोनेशियाई द्वीपसमूह

भारत और **इंडोनेशिया** के बीच बंगाल की खाड़ी और अंडमान सागर होने के बाद भी ये दोनों देश निकट समुद्री पड़ोसी हैं, जिनके बीच सांस्कृतिक, धार्मिक और वाणिज्यिक आदान-प्रदान का एक वृहद इतिहास रहा है। इंडोनेशिया कोई एक भूभाग नहीं है, यह वास्तव में द्वीपों का एक बड़ा समूह है, जिसमें अनेक बड़े व लगभग 17000 से अधिक छोटे द्वीप सम्मिलित हैं (चित्र 2.20)। दोनों पड़ोसी देशों के मध्य व्यापार और सामाजिक-सांस्कृतिक मेल-जोल की एक धरोहर है जो 2,000 वर्ष पूर्व भारतीय राज्यों तथा जावा और सुमात्रा के बड़े द्वीपों के मध्य आरंभिक समुद्री व्यापार से आरंभ हुई तथा भारत के प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय और प्राचीन इंडोनेशियाई मुआरा जांबी मंदिर परिसर के मध्य सहयोग ने इन संबंधों को और सुदृढ़ किया। बाद में इस्लाम भारतीय तटों से इंडोनेशिया पहुँचा।

चित्र 2.25 — इंडोनेशियाई मुद्रा– 'रुपिया' पर उनके राष्ट्रीय प्रतीक विष्णु का वाहन गरुड़ अंकित है।

चित्र 2.26 — मंडलाकार बोरोबुदुर स्तूप, विश्व का सबसे बड़ा बौद्ध स्मारक

साझा इतिहास और संस्कृति तथा भविष्य के लिए दूरदृष्टि ने द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान समय में भारत और इंडोनेशिया हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति, व्यापार और संधारणीय विकास को प्रोत्साहित करने के लिए क्षेत्रीय समूहों में साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं। विशेषतः समुद्री सुरक्षा, रक्षा और आपदा-प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में रणनैतिक सहयोग अधिक सुदृढ़ हुआ है। दोनों देशों के पास वृहत तटरेखाएँ हैं। समुद्री डकैती, जलवायु परिवर्तन और समुद्री मार्गों की सुरक्षा के विषय में दोनों राष्ट्रों की साझा चिंताएँ हैं, जो उनकी साझेदारी को विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण बनाती है।

भारत और इंडोनेशिया साथ मिलकर दर्शाते हैं कि कैसे दो प्राचीन सभ्यताएँ साझा मूल्यों और पारस्परिक सम्मान पर आधारित एक सुदृढ़ तथा भविष्योन्मुखी साझेदारी स्थापित कर सकते हैं।

इसे अनदेखा न करें

स्तूप एक बौद्ध तीर्थ स्थल होता है, जो प्रायः गुंबद के आकार में निर्मित किया जाता है। इसमें बुद्ध, वरिष्ठ भिक्षुओं या अन्य पूजनीय व्यक्तियों के पवित्र अवशेष सुरक्षित रखे जाते हैं। (उदाहरण के लिए, इस पाठ्यपुस्तक के भाग 1 में साँची स्तूप और भरहुत स्तूप का स्मरण कीजिए)। सा.सं. की आठवीं और नवीं शताब्दी में पत्थर से बना बोरोबुदुर स्तूप (चित्र 2.26) न केवल अपने विशाल आकार (चित्र में पर्यटक छोटे बिंदुओं की भाँति दिखेंगे) और पाँच विशाल प्लेटफार्मों में पिरामिडनुमा संरचना के लिए अद्वितीय है, अपितु इसमें बुद्ध की 500 से अधिक मूर्तियाँ हैं तथा अनेक छोटे स्तूप हैं। इसका अत्यधिक ज्यामितीय स्वरूप एक मंडल की प्रतिकृति है। मंडल पारंपरिक हिंदू, बौद्ध और जैन ज्यामितीय प्रतीक हैं जिनका उपयोग विभिन्न अनुष्ठानों में किया जाता है और सामान्यतया यह संपूर्ण ब्रह्मांड का प्रतीक माना जाता है।

© NCERT not to be republished

चित्र 2.27 — रामायण के एक दृश्य का प्रदर्शन करते हुए इंडोनेशियाई कलाकार

इसे अनदेखा न करें

इंडोनेशियाई द्वीप ऐसे क्षेत्र में अवस्थित हैं जहाँ प्रायः भूकंप आते रहते हैं और ज्वालामुखी विस्फोट होते रहते हैं। इसी कारण इंडोनेशिया विश्व के सर्वाधिक भूकंप-संभावित देशों में से एक है।

26 दिसंबर 2004 को इंडोनेशिया के निकट हिंद महासागर में आए एक शक्तिशाली भूकंप से एक भीषण सुनामी उत्पन्न हुई। समुद्र में उत्पन्न हुई ये विशाल लहरें अनेक देशों के तटों से टकराईं, जिससे वहाँ व्यापक विनाश हुआ। केवल भारत में ही लगभग 15,000 लोगों की मृत्यु हो गई, जिसने विशेषतः तमिलनाडु, केरलम और अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह को प्रभावित किया था। इस संपूर्ण क्षेत्र में 200,000 से अधिक लोगों की असामयिक मृत्यु हुई।

इस सुनामी आपदा ने उचित प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों की तत्काल आवश्यकता को उजागर किया। इस प्रकार भारत ने संवेदकों (सेंसर), उपग्रहों और संचार संपर्कों का एक विशाल/विस्तृत तंत्र स्थापित करने के लिए इंडोनेशिया, श्रीलंका, थाईलैंड और हिंद महासागर में स्थित अन्य देशों के साथ हाथ मिलाया। हैदराबाद में भारतीय सुनामी प्रारंभिक चेतावनी केंद्र न केवल भारत को अपितु पड़ोसी देशों को भी सतर्क करने में सहायता करता है। इसके माध्यम से समुद्र तल पर आने वाले संभावित भूकंपों से अनेक जीवन बचाए जा सकते हैं।

एक प्राचीन पड़ोसी

आइए, अब हम पुनः पश्चिम की ओर यात्रा करें। भारत और **ईरान** के मध्य कांस्य युग से ही घनिष्ठ संबंध रहे हैं। भारत और ऊबड़-खाबड़ ईरानी पठार के मध्य प्रारंभिक

© NCERT not to be republished

चित्र 2.28 — ईरान के चाबहार में शाहिद बेहिश्ती पत्तन

व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान मुख्य रूप से भौगोलिक मार्गों के माध्यम से हुआ, जो वर्तमान के पाकिस्तान और अफगानिस्तान से होकर निकलते हैं (चित्र 2.5)। कालांतर में ये मार्ग रेशम मार्ग का भाग बन गए, जिसके कारण वस्तुओं और विचारों का आदान-प्रदान होता रहा। इसके परिणामस्वरूप भाषा, साहित्य, कला, वास्तुकला, भोजन आदि क्षेत्रों में दोनों राष्ट्रों के पारस्परिक घनिष्ठ संबंध स्थापित हुए। दोनों राष्ट्रों के मध्य समुद्री मार्गों का भी उपयोग किया जाता था क्योंकि ईरान के पत्तनों से भारत के पश्चिमी तटों पर आवागमन सुगम था।

पारसी धर्म का प्राचीन पवित्र ग्रंथ *अवेस्ता* (इस पाठ्यपुस्तक के अध्याय 'भारत : एक सुरक्षित आश्रय-स्थल' देखें) भारत के *ऋग्वेद* से अनेक समानताएँ रखता है। *महाभारत* जैसे भारतीय ग्रंथों में पारसियों का उल्लेख 'पारसीक' नाम से किया गया है और आगे चलकर फारसी भाषा (जो उसी भाषा-परिवार से संबंधित है जिससे संस्कृत) मुगलों और अन्य शासकों द्वारा भारत में राजभाषा के रूप में प्रयुक्त हुई। नि:संदेह भारत के पारसी प्राचीन फारसी संस्कृति के साथ जीवंत संबंध रखते हैं।

चित्र 2.29 — पत्तन के विकास के लिए भारत और ईरान के मध्य रणनैतिक साझेदारी को चिह्नित करने के लिए जारी किया गया संयुक्त डाक टिकट

आधुनिक समय में भारत और ईरान के मध्य व्यापार, ऊर्जा और परिवहन जैसे अनेक क्षेत्रों में सहयोग रहा है। ईरान के 'चाबहार पत्तन' (चित्र 2.28 और 2.29) को विकसित करने में भारत सहायता कर रहा है। इसके माध्यम से भारत को अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक बेहतर पहुँच मिलती है। अंतरराष्ट्रीय चुनौतियों के बाद भी, दोनों देश एशिया में महत्त्वपूर्ण पड़ोसी के रूप में एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं।

© NCERT not to be republished

ताम्रभूमि

अरब प्रायद्वीप के दक्षिण-पूर्वी तट पर स्थित फारस की खाड़ी और अरब सागर के संगम पर स्थित (चित्र 2.16) **ओमान,** भारत के साथ समुद्री सीमाएँ साझा करता है। ओमान की अवस्थिति का महत्त्वपूर्ण रणनैतिक महत्त्व है। खाड़ी क्षेत्रों के साथ भारत के संबंधों में ओमान एक प्रमुख साझेदार है तथा क्षेत्रीय मंचों में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है।

भारत और ओमान के मध्य संबंध साझा भूगोल, इतिहास और सांस्कृतिक संपर्कों पर आधारित हैं। इन राष्ट्रों के मध्य पारस्परिक संपर्क लगभग 5,000 वर्षों से भी प्राचीन है, जो सिंधु या हड़प्पा (या सिंधु-सरस्वती) सभ्यता के समय से है।

5 से.मी.

चित्र 2.30 — ओमान से प्राप्त ताँबे का एक पिंड। यह तीसरी सहस्राब्दी सा.सं.पू. का है।

धातुपिंड (सिल्ली)
धातु का ऐसा ढला हुआ टुकड़ा जिसे परिवहन और पुनरुपयोग के लिए सुविधाजनक आकार में ढाला जाता है।

जैसा कि हमें ज्ञात हैं कि ओमान में ताँबा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, इसलिए ऐसा माना जाता है कि सिंधु-सरस्वती सभ्यता काल के व्यापारी ताँबे को धातुपिंडों (सिल्लियों) के रूप में लाकर ताम्रकारों को उपलब्ध करवाते थे। (चित्र 2.30)।

इसे अनदेखा न करें

चित्र 2.31 — मोतीश्वर मंदिर– ओमान के मस्कट में निर्मित एक शिव मंदिर

वर्तमान में ओमान की 10 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या भारतीय मूल की है। विगत कुछ शताब्दियों में भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों से व्यापारी समुदाय वहाँ जाकर बस गए। इस प्रकार ओमान में भारतीयों की एक स्वदेशी आबादी रहती है। बीसवीं शताब्दी के आरंभ में हिंदू समुदाय को वहाँ एक शिव मंदिर निर्मित करने की अनुमति दी गई (चित्र 2.31)।

© NCERT not to be republished

चित्र 2.32 — भारत-ओमान संयुक्त सैन्य अभ्यास, 2024

इसके अतिरिक्त, ओमान खाड़ी क्षेत्र में भारत का सबसे निकटतम सुरक्षा सहयोगी है। यह वह पहला देश है जहाँ भारत तीनों सशस्त्र बलों के साथ संयुक्त सैन्य अभ्यास करता है (चित्र 2.32)। दोनों देश हिंद महासागर की समुद्री सुरक्षा पर मिलकर कार्य करते हैं।

आगे बढ़ने से पहले...

- भारत और उसके पड़ोसी देशों के मध्य शताब्दियों से सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, धार्मिक और व्यावसायिक आदान-प्रदान होता रहा है। भारत की परंपराओं और मान्यताओं, कला, साहित्य और वास्तुकला ने दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में एक स्पष्ट एवं अमिट सांस्कृतिक प्रभाव अंकित किया है।
- उत्तरापथ, दक्षिणापथ, रेशम मार्ग और मसाला मार्ग जैसे प्राचीन व्यापार मार्गों ने भारत को मध्य एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया और अरब प्रायद्वीप से जोड़ा, जिसके परिणामस्वरूप इन सभी क्षेत्रों के साथ व्यापार और सांस्कृतिक संपर्क विकसित हुए।
- भारत ने शांतिपूर्ण ढंग से व्यापार, तीर्थयात्रा और संस्कृति के माध्यम से अपनी परंपराओं का प्रसार किया।
- वर्तमान में क्षेत्रीय संपर्क परियोजनाओं का लक्ष्य इन ऐतिहासिक संबंधों को पुनर्जीवित करना है। इसके अतिरिक्त, भारतीय फिल्में, संगीत और टेलीविजन प्रायः साझा रणनैतिक और व्यापारिक हितों के अतिरिक्त स्थायी संबंधों में योगदान करते हैं।

© NCERT not to be republished

प्रश्न और क्रियाकलाप

1. भारत के संदर्भ में दो उदाहरणों के माध्यम से बताइए कि समुद्री पड़ोसी देश कौन होता है?
2. बौद्ध धर्म के माध्यम से भारत ने पड़ोसियों के साथ कैसे संबंध स्थापित किए हैं? उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।
3. 'मुक्त सीमा' नीति का क्या तात्पर्य है? 'मुक्त सीमा' नीति भारत और नेपाल की सीमा पर रहने वाले लोगों के जीवन को किस प्रकार प्रभावित करती है?
4. इस अध्याय में कहा गया है— "पड़ोसी होने का अर्थ केवल भूगोल तक सीमित नहीं है।" इस कथन की एक उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।
5. भारत ने अपने पड़ोस के छोटे देशों की किन-किन तरीकों से सहायता की है? उदाहरणों के साथ समझाइए।
6. साझी चुनौतियाँ सहयोग के अवसर किस प्रकार बनी हैं? क्या इस अध्याय में इसे प्रदर्शित करने हेतु ऐसे उदाहरण हैं?
7. यदि सीमाएँ केवल संस्कृति और संबंधों के आधार पर निर्मित की जातीं, तो मानचित्र कैसा होता?
8. रूपरेखा (रिक्त) मानचित्र पर—
   - भारत के पड़ोसी राष्ट्रों को अंकित कीजिए।
   - भारत और उसके पड़ोसियों के मध्य सांस्कृतिक प्रवाह (जैसे— भोजन, पर्व, भाषा) को तीरों द्वारा दर्शाइए।
   - कल्पना कीजिए और 'सौहार्द्र की नई सीमाएँ' पुन: बनाइए जो पड़ोसी राष्ट्रों को नदियों, व्यापार मार्गों या सांस्कृतिक क्षेत्रों से जोड़ती हैं।
   - इस अध्याय में सूचीबद्ध देशों के राष्ट्रध्वज के चित्रों को एकत्रित कीजिए और उनका अवलोकन कर लिपिबद्ध कीजिए।

© NCERT not to be republished